का चुनाव करना होता है।

कुसमायोजन के कारण
(Causes of Maladjustment)

विद्यार्थी के कुसमायोजन का मूल कारण उसका प्रतिकूल वातावरण है। यह वातावरण निम्नलिखि तीन प्रकार का हो सकता है—

(1) प्राकृतिक वातावरण (Natural Environment)—गर्मी, सर्दी, वर्षा आदि ऋतुएँ और इनवे कारण उत्पन्न गर्म, सर्द, नम जलवायु आदि प्राकृतिक वातावरण के अन्तर्गत आते हैं। इनकी अधिकता य कमी के कारण अनेक रोग पैदा हो जाते हैं और उसे अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिससे कभी-कभी ये कुसमायोजन के कारण बन जाते हैं।

(2) भौतिक वातावरण (Physical Environment)—विद्यालय की भौतिक सुविधाएँ और साधन जैसे—भवन, कक्ष, फर्नीचर, जल, विद्युत, चॉक, श्यामपट्ट आदि भौतिक वातावरण के अन्तर्गत आते हैं जब विद्यालय में अत्यधिक गंदगी है, पर्याप्त भवन का अभाव है, विद्यालय उचित स्थान पर स्थित नहीं है कक्षा में विद्यार्थियों के बैठने के लिये स्थान नहीं मिलता, फर्नीचर की कोई व्यवस्था नहीं होती, पीने के लिये पानी नहीं मिलता, शौचालय आदि की कोई व्यवस्था नहीं होती, कक्षा में चॉक और श्यामपट्ट

Scanned with CamScanner

नहीं होते, यदि होते हैं तो बहुत चिकने, जिन पर लिखी गयी विषय सामग्री को विद्यार्थी पढ़ भी नहीं पाते और विद्यालय अधिकारियों से बार-बार आग्रह करने के बाद भी जब इनकी पूर्ति नहीं हो पाती तो ये कारण भी कभी-कभी विद्यार्थी के कुसमायोजन के कारण बन जाते हैं।

(3) सामाजिक वातावरण (Social Environment)—यह वातावरण तीन प्रकार का होता है—

(अ) पारिवारिक वातावरण (Family Environment)—परिवार में माता-पिता और बालक के बीच अच्छे सम्बन्धों का न होना, माता-पिता द्वारा बालक की उपेक्षा या अत्यधिक लाड़-प्यार, परिवार का असंगठन, भग्न परिवार, बेरोजगारी, निम्न सामाजिक स्थिति, आर्थिक संकट, माता-पिता के अत्यधिक ऊँचे आदर्श भी कुसमायोजन के कारण होते हैं।

(ब) सामुदायिक वातावरण (Community Environment)—समुदाय का कठोर संगठन, आन्तरिक विवाद, आज्ञा-पालन करवाने में शक्ति का प्रयोग, व्यक्तिगत स्वतंत्रता का अभाव, धार्मिक संघर्ष, पूर्वाग्रहों का स्थान, आर्थिक स्तरों में असमानता आदि बातें भी कभी-कभी विद्यार्थी के कुसमायोजन का कारण बनती हैं।

(स) विद्यालय का वातावरण (School Environment)—विद्यालय के वातावरण में विद्यार्थी के कुसमायोजन के अनेक कारण हो सकते हैं। कुछ कारण निम्न प्रकार हैं—

- **(i) शिक्षक से सम्बन्धित कारण**—विद्यार्थी से शिक्षक का अभद्र व्यवहार करना, उसकी भावनाओं का दमन करना, उसकी समस्याओं का उचित समाधान न करना, उसकी उपेक्षा करना, पक्षपातपूर्ण व्यवहार करना, शिक्षक के स्वयं के चरित्र का अच्छा न होना आदि, आदि।
- **(ii) पाठ्यक्रम से सम्बन्धित कारण**—पाठ्यक्रम का अत्यधिक सरल होना या दुरूह होना, पाठ्यक्रम में लचीलेपन का अभाव होना, विषयवस्तु का जीवनोपयोगी न होना आदि, आदि।
- **(iii) पढ़ने वाले साथियों से सम्बन्धित कारण**—पढ़ने वाले साथियों का अधिक योग्य और बुद्धिमान होना, उनका अत्यधिक साधन सम्पन्न होना अर्थात् उनके पास अच्छे कपड़े, अधिक पुस्तकें, अधिक जेबखर्च होना, उनके साथ विचार साम्य न होना, साथियों द्वारा बहिष्कार कर देना आदि, आदि।
- **(iv) स्वयं विद्यार्थी से सम्बन्धित कारण**—शारीरिक दोष, अत्यधिक ऊँचे उद्देश्य, असीमित आवश्यकताएँ, संकोचशीलता, किसी भी कारण से पनपी हीन भावना और निराशा आदि, आदि।

Scanned with CamScanner